रात्रिक्लास 20.3.68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

तुम ब्राह्मणों बच्चों बिगर बाकी है शूद्र। उनको यह पता नहीं है संगमयुग कब होता है। इस कल्प की संगमयुग की बहुत महिमा है। बाप ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। वह सिखलाते ही हैं सतयुग के लिए तो ज़रूर संगम पर ही आवेंगे ना। है यह भी मनुष्य। उनमें कोई कनिष्ट, कोई उत्तम है। उनके आगे महिमा गाते हैं आप पुरुषोत्तम हो हम कनिष्ट हैं। आपे ही बताते हैं मैं ऐसे हूँ ,ऐसे हूँ। बाकी ऐसे नहीं कहते हैं हम बन्दर हूँ। एक/दो को जनावर भी कहते हैं, बन्दर मकना हाथी भी कह देते हैं। हाथी भी बुद्धू होता है। जैसे भैंस। अभी यह पुरुषोत्तम संगम तुम ब्राह्मणों बिगर कोई भी नहीं जानते। उनकी कैसे एडवरटाइज़ करें जो मनुष्यों को पता पड़े। संगमयुग पर भगवान ही आकर राजयोग सिखलाते हैं। अभी ऐसी क्या युक्ति रचें जो मनुष्यों को पता पड़े; परन्तु होगा धीरे–2। अभी समय पड़ा है। बहुत गई थोड़ी रही.....हम कहते हैं तो मनुष्य जल्दी पुरुषार्थ करे नहीं तो कहेंगे सेकण्ड में ज्ञान मिलता है। तो हम उस समय में जीवन मुक्ति पा लेंगे। तुम्हारे आधा कल्प के पाप सिर पर हैं। वह थोड़े ही सेकण्ड में कटेंगे। उसमें टाइम लगता है। मनुष्य समझते हैं अभी 9 वर्ष पड़े हैं। अभी हम ब्रह्मा कुमारियों पास क्यों जावें? लिट्रेचर से उल्टा भी उठा लेते हैं। तुम समझते हो यह पुरुषोत्तम बनने का संगमुयग है। यह है हीरे जैसा। गाते भी हैं गोल्डेन जैसा, सिल्वर जैसा एज.....यह संगमयुग है डायमन(डायमण्ड) एज। सतयुग है गोल्डेन एज। यह तुम जानते हो स्वर्ग से यह संगम अच्छा। हीरे जैसा जन्म अमोलक गायन है ना। फिर कम हो जाता है। जवाहर से कम सोना। तुम यह भी लिख सकते हो। पुरुषोत्तम संगमयुयग है वर्थ डायमण्ड। सतयुग वर्थ गोल्ड। त्रेता वर्थ सिल्वर।.....यह भी समझा सकते हो। संगम पर ही हम मनुष्य से देवता बनते हैं। आठ रत्न गाये जाते हैं ना। तो डायमण्ड को बीच में रखा जाता है। हीरे का शो होता है। संगम है ही हीरे जैसा। हीरे का मान संगमयुग पर है। योग आदि जो सिखलाते हैं जिसको स्प्रीचुअल योग कहते हैं; परन्तु स्प्रीचुअल तो फादर ही है रूहानी। फादर और रूहानी नॉलेज संगम पर ही मिलती है। मनुष्य तो जो बड़े–2 बन्दर हैं वह इतना जल्दी नहीं समझेंगे। ग़रीब आदि को समझाया जाता हैं वह तो गुरर–गुरर करते हैं। तुमको .... छांटना पड़े कहां लिखा हुआ है। तुम कहेंगे फलाने वेद में ऐसा है। तो समझेंगे यह शायद बहुत वेद–शास्त्र पढ़ी है। तो यह लिखना है संगमयुग इज़ डायमन। उनकी आयु इतनी। सतयुग गोल्डेन एज उनकी (आ)यु इतनी शास्त्रों में भी स्वस्तिका निकालते हैं। तुम बच्चों को यह भी याद रहे तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। स्टुडेन्ट को खुशी होती है ना। स्टूडेन्ट लाइफ इज़ दी बेस्ट लाइफ। यह तो बहुत सोर्स ऑफ इनकम है। मनुष्य से देवता बनने की पाठशाला है। देवताएं तो विश्व के मालिक थे। यह भी तुमको मालूम है तो अथाह खुशी होनी चाहिए ; इसलिए गायन है अति इन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के गोप–गोपियों से पूछो। टीचर अंत तक पढ़ाते हैं तो उनको अंत तक याद करना चाहिए। भगवान पढ़ाते हैं और फिर भगवान साथ ले जावेंगे । पुकारते भी हैं लिबरेटर गाइड। दुःख़ा से छुड़ा देते हो। सतयुग में दुःख होता नहीं। कहते हैं विश्व में शान्ति हो। बोलो,आगे कब थी? उस समय कौन–सा युग था किसको भी पता नहीं। राम–राज्य सतयुग, रावण राज्य कलियुग। यह तो तुम तो तुम ही जानते हो। अभी तुम रावण सम्प्रदाय हो ना। कोई आरग्यु करे तो तुम कर सकते हो।

बच्चों को अनुभव सुनाना चाहिए, बस क्या सुनाऊँ दिल की बात। बेहद का बाप बेहद की बादशाही देने वाला मिला और क्या अनुभव सुनाऊँ। और कोई बात ही नहीं। इन जैसी खुशी और कोई होती नहीं। कोई भी हालत में कब रूस कर घर न बैठ जाओ। वह जैसे अपने तकदीर से रूठना होता है। पढ़ाई से रूठेंगे तो क्या सीखेंगे? बाप को पढ़ाना ही है ब्रह्मा द्वारा। तो एक/दो से कब रूठना न चाहिए। यह है माया। यज्ञ मे असुरों के विघ्न पड़ते हैं। मनुष्यों को न भगवान कहा जा सकता है, न देवता कहा जा सकता है। ओमशान्ति।